**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन

**सोहन कुमार मिश्र,** Ph.D., शिक्षा अध्ययनशाला
शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर, जगदलपुर, छत्तीसगढ़, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

**Author**
**सोहन कुमार मिश्र,** Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 26/04/2024
Revised on : -----
Accepted on : 27/06/2024
Overall Similarity : 00% on 19/06/2024

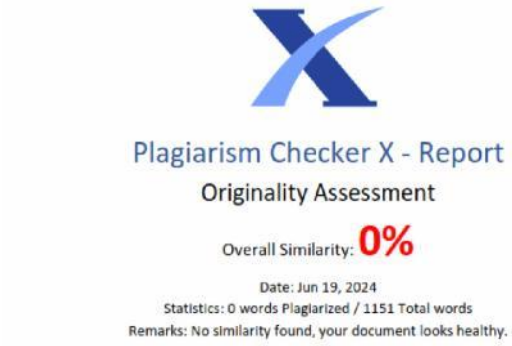


## शोध सार

*मनोवैज्ञानिक कारक आपस में एक दुसरे को किसी न किसी प्रकार से प्रभावित करते हैं। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षक को बाल मनोविज्ञान से परिचित होना आवश्यक है । प्रस्तुत शोध में संवेगात्मक बुद्धि का सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि का सृजनात्मकता पर धनात्मक प्रभाव पाया गया। किसी छात्र की संवेगात्मक बुद्धि अधिक हो तो उसे सृजनात्मक कार्यों की ओर प्रेरित किया जा सकता है। किसी कारणवश उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि संतोषप्रद न हो तो संभावित कारणों का पता लगाकर तथा संवेगात्मक बुद्धि के विकास द्वारा समस्या का समाधान किया जा सकता है।*

## मुख्य शब्द

*मनोविज्ञान, संवेगात्मक, बुद्धि, विद्यार्थी.*

## प्रस्तावना

व्यक्ति के मानसिक विकास में संवेगों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। सुखद संवेगात्मक स्थिति होने पर मानसिक स्वास्थ्य में भी वृद्धि होती है साथ ही उसकी सभी मानसिक शक्तियाँ एवं क्षमताएँ अधिक सक्रियता से कार्य करने में सहयोग करती हैं अर्थात् मानसिक स्वास्थ्य हेतु सकारात्मक संवेगात्मक बुद्धि का होना आवश्यक है। यह भी सत्य है कि बुद्धि एवं सृजनात्मकता में संबंध होता है। बच्चों की सृजनात्मकता की प्रवृत्ति ज्ञात होने पर उन्हें नवीन आविष्कार एवं अनुसंधान के लिए प्रेरित कर उनका आत्मबल एवं विश्वास बढ़ाया जा सकता है। अतः बच्चों में सृजनात्मक क्षमता का विकास करने के लिए एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि के लिए सकारात्मक

संवेगात्मक वातावरण के निर्माण पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

## शोध के उद्देश्य

शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं:

1. विद्यार्थियों की सृजनात्मकता पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का पता लगाना।
2. संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता में सहसंबंध ज्ञात करना।
3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि की तुलना करना।
4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की तुलना करना।

## परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

$\mathbf{H_{01}}$ संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध नहीं होगा।

$\mathbf{H_{02}}$ उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।

$\mathbf{H_{03}}$ ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

$\mathbf{H_{04}}$ ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।

## परिसीमन

प्रस्तुत शोध बस्तर जिले की 03 शहरी एवं 02 ग्रामीण शासकीय उच्चतर माध्यमिक शालाओं के कक्षा 8वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक परिसीमित है।

## शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

## न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में बस्तर जिले के 3 शहरी तथा 2 ग्रामीण शालाओं के 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया। ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों से न्यादर्श के रूप में 50 बालक तथा 50 बालिकाओं का चयन किया गया।

## उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है:

1. **सृजनात्मकता मापनी:** डॉ. बी.के. पासी, प्रोफेसर एंड हेड (रिटायर्ड), देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी, इंदौर (मध्यप्रदेश) – प्रकाशन वर्ष 1971।
2. **संवेगात्मक बुद्धि मापनी:** श्री अनुकूल हायड (इंदौर), श्री संजोत पेठे (अहमदाबाद), श्री उपिन्दर धर (अहमदाबाद) – प्रकाशन वर्ष 1971।

## चर

प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है:

1. **स्वतंत्र चर:** संवेगात्मक बुद्धि।
2. **आश्रित चर:** सृजनात्मकता।
3. **सहचर:** 1. लिंग – छात्र/छात्राएँ 2. क्षेत्र – ग्रामीण/शहरी।

## सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (ज.मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

**परिकल्पना क्रमांक 01**

"विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक– 01

| क्र. | विवरण | छात्र संख्या | परीक्षण से प्राप्त मान | | | | विशेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | M | SD | df | t | |
| 1 | संवेगात्मक बुद्धि | 200 | 110.10 | 30.82 | 398 | 0.60 | धनात्मक सहसंबंध |
| 2 | सृजनात्मकता | 200 | 035.93 | 11.36 | | | |

*(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)*

संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मक के मध्यमान क्रमशः 110.1 तथा 35.93, मानक विचलन 30.82 तथा 11.36 है। त का मान 0.60 पाया गया जो कि धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है। विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध पाया गया। अतः परिकल्पना–01 अस्वीकृत हुई।

**परिकल्पना क्रमांक – 02**

"उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक 02

| क्र. | विवरण | छात्र संख्या | परीक्षण से प्राप्त मान | | | | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | M | SD | df | t | |
| 1 | उच्च संवेगात्मक बुद्धि | 100 | 54.64 | 17.75 | 198 | 9.39 | 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं |
| 2 | निम्न संवेगात्मक बुद्धि | 100 | 30.60 | 18.50 | | | |

*(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)*

उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों के मध्यमान क्रमशः 54.64 एवं 30.60 है तथा ज का मान 0. 05 विश्वास स्तर पर प्राप्त मान से अधिक है। अतः उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना–02 अस्वीकृत हुई।

**परिकल्पना क्रमांक – 03**

"ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक 03

| क्र. | विवरण | छात्र संख्या | परीक्षण से प्राप्त मान | | | | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | M | SD | df | t | |
| 1 | ग्रामीण | 100 | 112.3 | 30.26 | 198 | 26.52 | 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं |
| 2 | शहरी | 100 | 024.5 | 13.50 | | | |

*(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)*

ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान क्रमशः 112.3 तथा 24.5, मानक विचलन t मान 0.58 पाया गया जो 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान से कम है अर्थात् सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना–03 अस्वीकृत हुई।

**परिकल्पना क्रमांक – 04**

"ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक– 04

| क्र. | विवरण | छात्र संख्या | परीक्षण से प्राप्त मान | | | | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | M | SD | df | t | |
| 1 | ग्रामीण | 100 | 44.75 | 19.55 | 198 | 0.54 | 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं |
| 2 | शहरी | 100 | 43.29 | 19.34 | | | |

*(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)*

ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता का मध्यमान क्रमशः 44. 75 तथा 43.29, मानक विचलन 19.55 तथा 19.34 व t मान 0.54 पाया गया। यह मान 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान से कम है सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना–04 स्वीकृत हुई।

## निष्कर्ष

प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं:

1. विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और सृजनात्मकता में धनात्मक सह–संबंध पाया गया।
2. उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया गया। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता अधिक पायी गयी।
3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर पाया गया।
4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अन्तर नहीं पाया गया।

## सुझाव

शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं:

1. संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव बुद्धिलब्धि पर पड़ता है। अतः बच्चों की संवेगात्मक बुद्धि को विकसित किया जाए।
2. संवेगात्मक बुद्धि द्वारा सामाजिक गुण विकसित होते हैं। बच्चों में संवेगात्मक बुद्धि को विकसित किए जाने से समरसता, सहयोग, मित्रता जैसे गुण विकसित होंगे।
3. सृजनात्मक क्षमता विकसित करने हेतु शाला में बच्चों को नवीन मौलिक उत्पादक कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाए।
4. उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले बच्चों में सृजनात्मक क्षमता अधिक होती है। जो बच्चे सृजनात्मक कार्यों में रूचि नहीं लेते उनको प्रेरित किया जाये।

## संदर्भ सूची

1. Tripathi, Lokesh,(2018): "Samvegatmak Budhhi ke Sandarbh me vidyarthion ki Srijnatmkta evam Shaikshik uplabhdhi ka adhyayan" *IOSR -JRME,* Vol.-8, Issue-6, p. 65.
2. Sharma, Gaytri (2012): "Samvegatmak Budhhi ke Sandarbh me vidyarthion ki Srijnatmkta ka adhyayan" Govt. Teacher Training College, Bilaspur, Chhattisgarh, p. 45.

********